मन के दस कमरे

पागलपन — अति

एक ऐसा घर है जिसमें हम सब रहते हैं, बिना कभी उसे चुने।

उसका कोई पता नहीं। वह किसी नक़्शे पर नहीं मिलता। फिर भी हम उसे किसी भी सच्चे घर से बेहतर जानते हैं।

भीतर दस दरवाज़े हैं।

कुछ हम हर दिन खोलते हैं, बिना जाने।

कुछ हम बंद रखते हैं, यह दिखावा करते हुए कि उनसे हमारा कोई नाता नहीं।

और फिर कुछ कमरे ऐसे हैं जिन्हें हमने ख़ुद नहीं बनाया, फिर भी वे किसी तरह हमारे भीतर बसे रहते हैं।

यह कोई सिद्धांत नहीं है।

यह मनोविज्ञान की कोई किताब नहीं जो शेल्फ़ पर धूल खा रही हो।

यह उस आदमी का विवरण है जो इन दस कमरों में एक-एक करके चला, अक्सर यह जाने बिना कि वह कहाँ है, और जो अब, कुछ और वर्षों के बोझ के साथ, उन्हें ठीक वैसे ही बयान करने की कोशिश कर रहा है जैसे उसने उन्हें जिया।

दस दरवाज़े। मैंने सब खोले।

कुछ जिज्ञासा से। कुछ अनिच्छा से। कुछ तब जब लौटना पहले ही बहुत देर हो चुका था।

अगर ये कमरे परिचित लगें, तो यह इसलिए नहीं कि वे मेरी कहानी कहते हैं।

यह इसलिए है क्योंकि, कहीं गहरे में, वे तुम्हारी भी कहानी कहते हैं।

फर्डिनांडो

पागलपन — अति

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

लोगों ने मुझे पागल कहा। एक बार नहीं, कई बार। कभी इसलिए कि मैं बहुत ज़्यादा सोचता था। कभी इसलिए कि मैं बहुत ज़्यादा महसूस करता था। और कभी बस इसलिए कि मैं चीज़ों को एक अलग कोण से देखता था। समय के साथ मैंने समझा कि पागलपन अक्सर वह ठप्पा है जो हम उस चीज़ पर चिपका देते हैं जिसे हम किसी ख़ाने में नहीं रख पाते। फिर भी एक क़िस्म का पागलपन ऐसा भी होता है जो हद से ज़्यादा संवेदनशीलता से जन्म लेता है।

हद से ज़्यादा सवाल करने से। गहराई के बिना सतहों को क़ुबूल न कर पाने से। पागलपन एक ऐसा कमरा है जहाँ विचार भाषा से तेज़ दौड़ता है। जहाँ भावनाएँ एक साथ, एक ही झोंके में आ पहुँचती हैं। जहाँ दिल अपने दरवाज़े बंद नहीं कर पाता। जो कोई इससे गुज़रता है, वह कभी वैसे का वैसा बाहर नहीं निकलता। क्योंकि उसने कुछ देख लिया होता है। और जो एक बार देख लिया जाए, उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। बहुत-से लोग मानते हैं कि पागलपन बुद्धिमत्ता का उल्टा है। मुझे इस पर यक़ीन नहीं। कभी-कभी तो ये दोनों क़रीबी रिश्तेदार होते हैं। कभी-कभी पागलपन बुद्धिमत्ता का ही अपने आख़िरी छोर तक पहुँच जाना होता है। वह बिंदु, जहाँ उसे अब और थामा नहीं जा सकता। जहाँ वह हद से ज़्यादा कड़ियाँ देख लेती है। हद से ज़्यादा मायने। एक ही वक़्त में हद से ज़्यादा हक़ीक़त। और जब ऐसा होता है, तो भाषा नाकाफ़ी पड़ जाती है। बस कोई इशारा—या ख़ामोशी—एक अधूरे अनुवादक की तरह बची रह जाती है।

फर्दिनांदो

 © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।